भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

29 दिसम्बर, 2017

विश्वासघाती जिनुगु नरसिंहरेड्डी को सीसी, भाकपा (माओवादी) ने पार्टी से बहिष्कार करती है!

23 दिसम्बर को हमारी पार्टी के केन्द्रीय कमेटी (सीसी) के सदस्य जिनुगु नरसिंहरेड्डी उर्फ जम्पन्ना अपनी पत्नि रजिता (जया) के साथ दुश्मन के सामने घुटने टेक दिया और इसके लिए अपनी स्वास्थ्य और पार्टी के उच्च नेतृत्वकारी के साथ आपसी मतभेद को बहाना बनाया। विगत दो सालों से उनकी व्यवहार शैली से नजदीक संबंध रखने वाले हमारी पार्टी के नेतृत्व और कतरों को उनकी आत्मसमर्पण कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन, हमारी पार्टी के उच्च स्तर की कमेटी के सदस्य रहते हुए, इस तरह सैद्धांतिक और राजनीतिक तौर पर कमजोर होकर, दुश्मन के सामने घुटने टेक देना देश भर में हमारी पार्टी के सदस्यों और क्रांतिकारी जनता को जरूर एक चिन्ता की विषय होगी। लेकिन जिन लोगों को हमारी पार्टी के इतिहास के बारे में जानकारी है, जनयुद्ध के विकास के क्रम में इस तरह के कमजोर ताकतें आखरी तक टिक नहीं पाने की वजह से पतित होकर चले जाना, उन लोगों के लिए अचरज की कोई बड़ी बात नहीं होगी। जिन लोग क्रांति में, पार्टी में और जितने भी कठिन परिस्थितियां हो, जनता के हितों के अनुरूप अपने आप को ढाल में असमर्थ है, उन हितों से अपनी व्यक्तिगत हितों को ऊंचा रखते हैं, वे लोग इस तरह घुटने टेक देना अनिवार्य है। नरसिंहरेड्डी सीसी सदस्य होने के बावजूद, विगत 3-4 वर्षों से उन्होंने कम से कम पार्टी के एक प्राथमिक सदस्य की चेतना भी नहीं दर्शाया था। अस्वस्थता, सैद्धांतिक मतभेद सिर्फ अपनी पतन और विश्वासघात को छिपने के लिए सिर्फ बहाना है। हमारी केन्द्रीय कमेटी नरसिंहरेड्डी के अराजक बर्ताव और दुश्मन के सामने उनकी पतन को निन्दा करती है और उन्हें पार्टी से बहिष्कार किया जाता है।

नरसिंहरेड्डी की पत्नि रजिता (जया) ने एक दशक से ज्यादा समयकाल से पार्टी में काम करते हुए डीवीसी स्तर तक विकसित हुई थी। लेकिन उन्होंने नरसिंहरेड्डी के मौजूद कमजोरियों के बारे में स्पष्ट रूप से समझते हुए भी, साथी कामरेड लोग उन्हें आलोचना करने के बावजूद, उन्होंने उनके खिलाफ एक शब्द भी आलोचना के रूप में न रखकर एक पत्नि के रूप में ही रह गयी थी। पितृसत्तात्मक मूल्यों को पालन करते हुए अंत में उनके साथ दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था। इसलिए उनकी पार्टी सदस्यता रद किया जाता है।

फरवरी 2017 में आयोजित सीसी के 5वीं बैठक में नरसिंहरेड्डी के अंदर जड़ जमाए हुए व्यक्तिवाद, नौकरशाही, भ्रमित-प्रतिष्ठा का लालच और दुश्मन का डर बढ़ जाना जैसे गैरसर्वहारा रूझानों के बारे में चर्चा की गयी थी। उन्होंने अपनी मनोगत विचारों को कमेटी पर थोपने के लिए कई तरह का प्रयास करते थे। उसके लिए सर्वहारा पार्टी का अनुशासन को तोड़ने सहित जनवादी केन्द्रीयता को भी नजरअंदाज कर मनमानी तरके से जड़ात्मक तर्क-वितर्क सामना लाना उनकी आदत-सी बन गयी थी। उन्होंने चीजों को अपनी मनमानी से चर्चा में शामिल कर कमेटी बैठकों में ठहराव की स्थिति पैदा करते थे। कमेटी सदस्यों से गम्भीर विरोध जताने पर नाराज हो जाते थे और बैठकों का बहिष्कार करने का दबाव बनाते थे। पार्टी निधियों की मनमानी और असंयमित ढंग से खर्चा कर कमेटी के पास सही लेखा-जोखा नहीं देते थे। उनके गलतियों के खिलाफ विभिन्न कमेटियां संघर्ष करने के बावजूद, भ्रमित-प्रतिष्ठा से लालच होकर उन्होंने उन गलतियों को नहीं सुधारा और कम से कम उन्हें स्वीकारने की प्रयास भी नहीं किया। परिणामस्वरूप उनकी उन गलतियां और बढ़ते गए। उनके अंदर क्रमशः दुश्मन का डर भी बढ़ाता गया। यह डर इतना बढ़ा था कि उनके साथ रहने वाले सुरक्षा गार्ड कामरेड, उनके द्वारा नेतृत्व प्राप्त करने वाले इलाके में आम दस्ते के सदस्य भी उनपर आलोचना साधने की स्थिति पैदा हुई थी। दरअसल आज की क्रांतिकारी अंदोलन द्वारा सामना की जाने वाली कठिन परिस्थितियों में, दुश्मन द्वारा जारी भारी सैनिक हमलों के बीच पार्टी के उच्चतम स्तर के नेतृत्वकारी कामरेड बहुत-ही आत्मविश्वास के साथ रहते हुए, सैद्धांतिक, राजनीतिक और सांगठनिक तौर पर पार्टी और पीएलजीए के शक्तियों को हिम्मत के साथ नेतृत्व प्रदान करने की जरूरत है। इसे एक सीसीएम के रूप में वे सही तरीके से समझ नहीं पाए थे। परिणामस्वरूप, पार्टी और क्रांतिकारी आंदोलन को बहुत नुकसान कर रहा था। 2016 में प्रस्तावित सीसी बैठक को सफल बनाने से संबंध में वे अपनी जिम्मेदारी को इमानदारी, दृढ़संकल्प के साथ नहीं निभाने और उसके लिए साहस करने से दूर, उस बैठक को रोकने के लिए अंत तक कई रुकावटें पैदा किया था।

क्रांतिकारी आंदोलन के सामने आ बैठे कई सवालों को सुलझाने के लिए 2017 में आयोजित केन्द्रीय कमेटी (सीसी), केन्द्रीय रीजिनल ब्यूरो (सीआरबी) के बैठकों के अवसर पर नरसिंहरेड्डी जरूर उपस्थित होने का था। लेकिन दुश्मन के हमलों को देखकर बहुत-ही आतंकित होकर उन्होंने बैठकों में उपस्थित नहीं हुए। उनको अंदाजा था कि उन बैठकों में उपस्थित होने पर वे गम्भीर आलोचनाओं का शिकार हो सकता है। यह भी उनकी अनुपस्थिति का मुख्य कारण रहा था। नरसिंहरेड्डी में निहित इन सभी

कमजोरियों को गहराई से सीसी में चर्चा कर उनपर अनुशासन कार्रवाई की गयी थी। उन्हें दो साल तक सीसी से निलम्बित कर, ओड़िशा राज्य कमेटी के सदस्य के रूप में रहकर काम कराने का निर्णय लिया गया था। हमारी पार्टी के संविधान के मुताबिक निलम्बित करने की समय-सीमा एक साल से ज्यादा नहीं होने की बात स्पष्ट रूप से लिखने के बावजूद, नरसिंहरेड्डी के कमजोरियों की गम्भीरता को देखते हुए सीसी ने उनकी निलम्बन की समय-सीमा दो साल तक रखने का निर्णय लिया था। नरसिंहरेड्डी के वरिष्ठिता को और वर्गसंघर्ष व क्रांतिकारी आंदोलन में खुद की अनुभव को ध्यान रखकर सीसी ने सोचा कि अपने गलतियों को गम्भीर रूप से लेकर सुधारेंगे। लेकिन सीसी द्वारा लिए गए इस अनुशासित कार्रवाई को उन्होंने पचा नहीं पाया था।

उन्होंने आखरी तक दावा करता रहा था कि पार्टी के लाइन (कार्यदिशा) पर और दस्तावेजों पर उनके अंदर कोई भिन्नमत नहीं है। सीसी के 5वीं बैठक में ही सीसी ने गहराई से एक प्रस्ताव को पारित किया जिसमें पार्टी में अगर किसी को भिन्नमत होने पर उसे सुलझाने के लिए अपनाने की पद्धति के बारे बताया गया। इस प्रस्ताव की रोशनी में भी उन्होंने किसी भी विषय पर भिन्नमत होने की सूचना निदिष्ट रूप से नहीं दिया।

प्रेस मीट में नरसिंहरेड्डी इन वास्तविक विषयों को छिपाते हुए, राजनीतिक रूप से पतन होकर अंत में क्रांति के प्रति विश्वासघात कर दुश्मन के सामने घुटने टेक दिया।

नरसिंहरेड्डी का पतन और विश्वासघात के मुख्य कारण क्या है?

पहला, उन्होंने तीन दशकों से ज्यादा समय से क्रांतिकारी आंदोलन में विभिन्न स्तरों में कार्यरत था, बावजूद उनमें व्यक्तिवाद गम्भीर रूप से बढ़ने के कारण, उन्होंने अपनी कमेटी में शामिल होकर टीम स्पिरिट के साथ काम नहीं कर पाया और एक सर्वहारा क्रांतिकारी के रूप में खुद को ढाल नहीं पाया।

दूसरा, सैद्धांतिक, राजनीतिक और सैनिक रूप से उनके अंदर विकास रुक गया। परिणामस्वरूप, आंदोलन और पार्टी का नेतृत्व प्रदान करने की उनकी क्षमता क्रमशः कम होता गया।

तीसरा, निम्नपूंजीवादी अराजकता, नौकरशाही और गैरसांगठनिक रवैया उनके अंदर मजबूती से ठहरे हुए थे। अपने कमी-कमजोरियों के बारे में उन्हें अच्छी समझदारी होने के बावजूद, उन्हें सुधारने पर किसी भी कोशिश उन्होंने नहीं किया। उनके अंदर निहित भ्रमित-प्रतिष्ठा उन्हें ईमादारी से आत्मालोचना करने में खुद के लिए रुकावट-सा बन गया। परिणास्वरूप उनके अंदर क्रांतिकारी हिम्मत पूरी तरह खो गया।

चौथा, हाल-ही में क्रांतिकारी आंदोलन कठिन दौर का सामना करने की स्थिति में गम्भीर नुकसानों और दुश्मन के हमले की तीव्रता को देखकर उनके अंदर डर चरमसीमा पर पहुंच गया। वर्तमान प्रतिकूल परिस्थिति और दुश्मन के हमले का सामना करते हुए आंदोलन का नेतृत्व प्रदान करने में उनका विश्वास खो गया। आंदोलन, पार्टी और जनता के हितों को अपने हितों के रूप में लेकर आत्मत्याग कर काम करने की चेतना उन्होंने खो दिया।

अभी तक नरसिंहरेड्डी का क्रांतिकारी जीवन में द्वितीय पहलू के रूप में रहे उनकी कमी-कमजोरी अब प्रधान पहलू के रूप में तब्दील हो गयी। तब वे एक क्रांतिकारी और एक क्रांतिकारी नेता रूप में रहे थे, अब प्रतिक्रांतिकारी और गद्दार के रूप में तब्दील हो गया। कोई भी क्रांतिकारी, विगत में जिनके इतिहास जितनी भी आदर्शनीय होने के बावजूद, अपना/अपनी गैरसर्वहारा विचारों पर और गलतियों पर खुद आंतरिक संघर्ष नहीं करने से बहुत समय तक आगे नहीं बढ़ सकेंगे। यह क्रांतिकारी द्वंद्वात्मकता है। यह नियम समाज, व्यक्तियों और क्रांतिकारियों सहित सभी पर लागू होती है। स्वार्थचितक और पार्टी, क्रांति व उत्पीड़ित जनता से खुद को ऊपर रखने वाले करिअरवादी नेता इतिहास की कूडेदान में फेंक दिया जाता है। उसी तरह नरसिंहरेड्डी भी इतिहास के पन्नों में विश्वासघातियों से एक होकर हमारी पार्टी के इतिहास में रह जाएंगे।

नरसिंहरेड्डी हमारी पार्टी, कतार और क्रांतिकारी जनता के प्रति एक नकारात्मक शिक्षक के रूप अंकित होगा। क्रांतिकारियों में आंतरिक संघर्ष दुश्मन के खिलाफ संचालित वर्गसंघर्ष से भी बहुत क्रूर, कठिन और भयप्रद रूप लेती है। इसके लिए बहुत ही हिम्मत और दृढ़निश्चय होना चाहिए। इन सबसे ज्यादा मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद (मालेमा) सिद्धांत और उत्पीड़ित जनता तथा पार्टी के प्रति गहरी समर्पण होना चाहिए।

प्रिय जनता!

आइए, पार्टी, क्रांति और जनता के हितों से अलग होकर, अपने स्वार्थ हितों के लिए गद्दारी करने वाली विश्वासघातियों को तीव्र निन्दा करें और उन्हें घृणा करें। इन गद्दारों को कठिन सजा दें। हमारे प्यारे अमर शहीदों द्वारा दर्शाए गए क्रांतिकारी रास्ते को लाल रोशनी करने वाले कम्युनिस्ट मूल्यों और व्यवहार को अंतिम सांस तक ऊंचा उठाते हुए, दीर्घकालीन लोकयुद्ध के रास्ते पर, समाजवाद-साम्यवाद को हासिल करने के लक्ष्य से भारत की नवजनवादी क्रांति को आगे बढ़ाएं।

(अभय)
प्रवक्ता,
केन्द्रीय कमेटी, भाकपा (माओवादी)